[Shri Nihar Rajan Laskar]

Rs. 1.000. We are going to lay more emphasis on doctors, non-medical supervisor, laboratory tenchnicians and para-medical workers.

13 hrs.

One further point that the hon. Member has made is about the Act. The States have been several times advised to repeal this Act. It is the State Governments who have to do it. Inspite of our repeated requests to them no State Government has repealed this Act so far but none-theless it is not being enforced in many States.

At the end I can only say that the hon. Member has put forth many valuable suggestions. They have been well taken and we will see how they can be implemented.

MR. DEPUTY-SPEAKER: We adjourn for lunch to meet at 1405 hours.

The Lok Sabha adjourned till five minutes past Fourteen of the Clock.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at ten minutes past Fourteen of the Clock.

[SHRI GULSHER AHMED *in the Chair*]

COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS

TWENTY-THIRD AND TWENTY-FOURTH REPORTS

SHRI BANSI LAL (Bhiwani): I beg to present the following Reports (Hindi and English versions) of the Committee on Public Undertakings:—

(i) Twenty-third Report on Steel Authority of India Ltd.—Import of Steel and Minutes of sittings of the Committee relating thereto.

(ii) Twenty-fourth Report on Industrial Development Bank of India and Minutes of sittings of the Committee relating thereto.

MR. CHAIRMAN: Now, we go to Calling Attention. Mr. Bapusaheb Parulekar. He is not here. Then, Shri Harish Chandra Singh Rawat.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE —*Contd.*

ERADICATION OF LEPROSY—*Contd.*

श्री हरीश चन्द्र सिंह रावत (अल्मोड़ा) अधिष्ठाता जी, कुष्ट रोग एक चिन्तापूर्ण मानवीय समस्या है और दुख की बात है कि इस प्रकार के रोगियों को चाहे हम स्वीकार करें या न करें जनता में उनको घृणा की दृष्टि से देखा जाता है जिससे उनमें हीनता की भावना पैदा होती है और यह भावना रोग से ज्यादा उनके लिये नुकसानदेह है। मैं मानता हूं कि इस रोग के उन्मूलनार्थ न तो पैसे की कमी है और न इच्छाशक्ति की कमी है और न हमारे विशेषज्ञों की कमी है। लेकिन सवाल इस बात का है कि इस रोग के विषय में जो भ्रामक धारणायें हैं उनका कैसे उन्मूलन किया जाये ? इस संदर्भ में हमारी जो स्वैच्छिक सस्थायें हैं और समाजसेवी संस्थायें हैं वह बड़ा महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकती हैं। लेकिन आपने इन स्वैच्छिक संगठनों के लिये केवल 31 लाख रु0 का इस वर्ष प्रावधान किया है। हमारे यहां भी एक कुष्ट रोग आश्रम है और वहां के रोगियों को केवल 12 रु0 सरकार की ओर से मिलता है, शेष समाज सेवी संस्थाएं पैदा करती हैं। लेकिन उसके बावजूद भी रोगियो को वह उतना नहीं दे पाती हैं जितना कि उनको मिलना चाहिये। तो क्या आप इस ग्रान्ट को बढ़ाने पर विचार करेंगे ?

इस संदर्भ में दूसरी बात यह है कि जो भ्रान्त धारणाएं हैं, जैसे रोगी होता है और वह ठीक भी हो जाता है तो उसके पुनर्वास की समस्या पैदा होती है कि वह क्या रोजगार करे। और इस सम्बन्ध में कोई ऐसे रोजगार इस तरह के रोगियों को